International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 11-13

नरोत्तमदास कृत 'सुदामा-चरित' एक नए परिप्रेक्ष्य म

निलेशकुमार डी. मकवाणा
आसिस्टन्ट प्रोफेसर, (फोक एन्ड इन्डिजोनस स्टडीज), अनुस्नातक गुजराती विभाग, एन. एस. पटेल आटर्स कालेज, आणंद

भागवत के दशमस्कंध में अस्सीवें अध्याय में जो श्रीकृष्ण और सुदामा की कथा आती है, उस कथा के 'कृष्ण-सुदामा मैत्री विषयक प्रसंग' हिन्दी साहित्य के मध्यकाल के कृष्ण-कवियों का प्रिय विषय बना है। सुदामा को कथा मध्ययुग की सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय कथा है। इस परम्परा की पहली प्राप्त रचना कवि हलधरदास कृत 'सुदामा चरित' है। जो लगभग ३६० छप्पय छन्दों में रची गई थी। हलधरदास का 'सुदामा चरित' प्रबन्धात्मकता की दृष्टि से भी इस परम्परा के सभी खंडकाव्यों से अधिक सफल है।

इस परम्परा की दूसरी महत्वपूर्ण रचना नरोत्तमदास रचित 'सुदामा चरित' है। यह भी १६वीं शती उत्तरार्द्ध की रचना है। हिन्दी साहित्य में नरोत्तमदास का 'सुदामा चरित' ही सर्वाधिक चर्चा का विषय बना रहा है। क्योंकि भाव, शैली की दृष्टि से नरोत्तमदास की रचना श्रेष्ठ है। नरोत्तमदास हिन्दी साहित्य के मध्यकालोन कवि हैं। नरोत्तमदास के जीवनवृत के सम्बन्ध में प्रमाणित माहिती (जानकारी) उपलब्ध नहीं है। शिवकुमार मिश्र ने लिखा है-"नरोत्तमदास भक्तिकालीन रचनाकारों में कदाचित अकेले कवि हैं, जो मध्यकालीन अपनी छोटी-सी रचना 'सुदामा चरित' के बल पर भक्तिकाल की कबीर, जायसी, मीरां, तुलसी और सूर जैसी प्रतिभाओं के साथ शताब्दियों के समय लांघते हए हमारे अपने समय में आ सके हैं।"[१] नरोत्तमदास के जन्म संवत के बारे में काफी कुछ अटकलें हैं। इसके विषय में 'शिवसिंह सरोज'में लिखा है कि ये संवत १६०२ में जीवित थे। आचार्य शुक्ल जी ने और अन्य विद्वानों ने भी शिवसिंह सरोज का ही अनुमोदन कर कोई विशेष खोज नहीं की। डा. रामनरेश त्रिपाठी ने इनकी एक मात्र प्राप्त कृति 'सुदामा चरित'को संवत १५८२ की रचना माना है। नरोत्तमदास का निवासस्थान उत्तरप्रदेश के सीतापुर जिले का बाड़ी ग्राम बतलाया गया है, किन्तु अभी तक यह प्रमाणित नहीं हो सकता है कि बाड़ी ग्राम उनका जन्मस्थान है या निवासस्थान। नरोत्तमदास जाति से ब्राह्मण माने जाते हैं। कुछ विद्वान उसे कान्यकुब्ज ब्राह्मण मानते हैं। आचार्य शुक्ल जी के इतिहास ग्रंथ में नरोत्तमदास द्वारा रचित तीन कृतियों का जिक मिलता है। (१)सुदामा चरित (२)ध्रुव चरित और (३)विचारमाला। किन्तु अंतिम दो रचनाएँ-ध्रुवचरित और विचारमाला अप्राप्य हैं। इस प्रकार नरोत्तमदास द्वारा रचित 'सुदामा चरित' ही उनकी कीर्ति का एक मात्र आधार स्तम्भ है।

'सुदामा चरित' कृष्ण-सुदामा की मैत्री को व्यंजित करने वाली एक सुन्दर आख्यान कथा है। कुछ विद्वानों ने इसे खण्डकाव्य कहा है। किन्तु खण्डकाव्य के लक्षणों का इसमें सर्वथा अभाव है। शायद इसीलिए डा. शिवकुमार मिश्र ने इसे आख्यानकथा कहकर आख्यान परम्परा की श्रेणी में स्थान दिया है। इसमें उस समय के पीड़ित लोक समुदाय के लिए अटूट आशा भरी हुई थी। समग्र कृष्ण भक्ति काव्य में केवल यही एक परम्परा है जिसमें तत्कालीन जन-जीवन का स्पंदन सुनने को मिल पाता है। सुदामा की दीनता युग की दीनता थी, सुदामा के रूप में मानो युग ही अपने सारे समुदाय की पीड़ा के मूर्त विग्रह थे जिन्हें अशरण शरण, अनाथों के नाथ, दयानिधान भगवान ने पलभर में उल्लास की प्रतिमूर्ति बना दी। दीनबंधु की इस कृपा में युग ने अपना प्रास देखा था, सुदामा के सत्कार से उसे आश्वासन मिला था, भगवान की मधुर वाणी में उसे अनंत आशा दिखी थी। कृष्ण के लोकपालक रूप का चरमोत्कर्ष इसी आख्यान में है। उनकी सारी लोकरंजक लीलाएँ इस लोक से अलग हैं।

इस रचना में सुदामा की दैन्य अवस्था तथा एक दरिद्र ब्राह्मण की सत्यनिष्ठा और निर्धन ब्राह्मण परिवार का चित्रण कवि ने बड़े यथार्थ के साथ किया है। यह आख्यान कथा १२० पदों में रचित है। इसमें कवि ने विभिन्न छंद एव प्रसिद्ध गुणयुक्त सरल शैली का प्रयोग किया है। 'सुदामा चरित' में श्रीकृष्ण और सुदामा के पारस्परिक मैत्री और प्रेम-भाव की विवति हुई है। नरोत्तमदास ने अपने इष्टदेव कृष्ण को विष्णु का अवतार माना है। वे उन्हें भक्तवत्सल, दीनबंधु, करुणा निधान, सर्वशक्तिमान मानते हैं। कृष्ण के प्रति उसकी संपूर्ण समर्पित है। जहाँ तक भक्ति के प्रकार का सवाल है कवि की भक्ति सख्य भाव की प्रतीत होती है, किन्तु यदि सूक्ष्मता से देखा जाय तो यह सिद्ध होता है कि कवि की भक्ति ईश्वर के प्रति एक सांसारिक प्राणी की हो सकती है, वही है जिसके प्रमाण में कह सकते हैं कि'सुदामा चरित'में जब सुदामा की पत्नी सुदामा को बार-बार हठ करके श्रीकृष्ण के पास जाने के लिए विवश करती है तो सुदामा कहते हैं कि "मेरे लिए हरि के पद-पंकज बार हजार लै देखु परिच्छा।" तु हजार बार परीक्षा

करके देख ले-मेरे हृदय में भगवान श्रीकृष्ण के चरण-कमलों के कितने गाढ़े निशान है। ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जिसमें सुदामा श्रीकृष्ण के आगे एक सांसारिक प्राणी प्रतीत होता है। अतः कहा जा सकता है कि कवि की भक्ति के दो स्तर-मानवीय स्तर पर साख्य भक्ति और आध्यात्मिक स्तर पर भगवान और भक्त के बीच की भक्ति ।

डा. शिवकुमार मिश्र के अनुसार-"नरोत्तमदास की और एक विशेषता है कवि कौशल। नरोत्तमदास कोरे सहदय और भावुक कवि ही नहीं थे, कवि कौशल और कवि चातुरी से भी वे परिचित थे । कथा के ऐसे प्रसंगों में जहाँ कवि कौशल अपेक्षित है, उन्होंने कवि कौशल का भी सहारा लिया है। किन्तु काव्य की भावगर्भिता की कीमत पर नहीं।"(२) द्वारिकापुरी के वैभव के वर्णन में अथवा सुदामापुरी के ऐश्वर्य की चर्चा, उनकी कविता यहाँ सज्जित होकर आई है; उसके अनेक उदाहरण हैं। अतः कहा जा सकता है कि आवश्यकता पड़ने पर और संदर्भ आने पर भक्त नरोत्तमदास सुकवि के रुप में अपने पूरे कवि कौशल के साथ भी काव्य में अपना परिचय देते हैं।

नरोत्तमदास का 'सुदामा चरित' एक आख्यान काव्य है; अतएव बड़े आकार के प्रबन्ध काव्यों-महाकाव्यों की तुलना में उसमें पात्रों की संख्या अधिक नहीं है। देखा जाये तो 'सुदामा चरित' में कुल मिलाकर दो पुरुष और दो नारी पात्र हैं। सुदामा की पत्नी जिसके नाम का उल्लेख कृति में नहीं मिलता, जो 'ब्राह्मणी' के नाम से सम्बोधित है और दूसरा नारी पात्र रुक्मिणी-कृष्ण की पत्नी। नरोत्तमदास ने अपनी कृति में पात्रों को पौराणिक धरातल पर से यथार्थ की भूमि पर लाने का संभवतः प्रयास किया है। जिसमें उन्हें कुछ अंश तक सफलता भी मिली है। अपनी एक मात्र कृति में इतनी बारीकी और कलात्मकता से चरित्र-चित्रण का निर्वाह किया है, तो उन्हें श्रेष्ठ कवि एवं एक व्यवहार-कुशल व्यक्ति होने का प्रमाण देती है। श्रीकृष्ण और सुदामा के संबंध द्विस्तरीय हैं- मानवीय स्तर के संबंधो में वे परस्पर बाल-सखा हैं, अटूट मैत्रीभाव में बंधे हुए और आध्यात्मिक स्तर पर वे भगवान और भक्त हैं, एक दीनबंधु है तो दूसरा दैन, एक त्रिलोक का स्वामी है दूसरा सांसारिक जीव ! 'सुदामा चरित' पढ़ते समय इनके संबंधो म इस अंतर को ध्यान में रखना जरूरी है। नरोत्तमदास ने स्त्री पात्रों के चित्रण में मनोवैज्ञानिक अभिगम को अपनाया है । ये नारी पात्र नरोत्तमदास की यर्थाथवादी रचना-दृष्टि की उपलब्धि है।

नरोत्तमदास की भाषा ब्रज थी। कवि ने संदर्भ के अनुसार भाषा का सरल और काव्यात्मक प्रयोग किया है। 'सुदामा चरित' में ऐसे अनेक पद हैं जिसमें सरल बोल-चाल की भाषा का प्रयोग किया है और कुछ पदों में कवि-कौशल तथा कवि-चातुरी से पूर्ण भाषा का प्रयोग भी कवि केय हाँ मिलता है। नरोत्तमदास ने तत्सम शब्दों का प्रयोग अधिक किया है जैसे कि "लोचन, ललाट, द्वारका, सुवर्णमयी, पैज, बिरधायन आदि।" तो अरबी और फारसी के शब्दो का उपयोग भी इन्होनें किया है। जैसे महल, बाग, बकसै, दरबार, हजार, पानदान आदि । नरोत्तमदास ने महावरों का प्रयोग भी किया है। जैसे- 'हृदय खखेटना', 'सिद्ध करना', 'केर ओरडना', आदि। इनकी भाषा परिमार्जित और प्रौढ़ है। हिन्दी-साहित्य में ऐसी बढ़िया भाषा लिखने वाले कवि कम हैं। सूर, तुलसी और रसखान की कविता में ही ऐसी प्रसादपूर्ण स्फीत भाषा मिलेगी।

नरोत्तमदास की रचना में संवाद योजना प्रशंसनीय है। 'सुदामा चरित'में संवाद दो स्तरों पर है- कृष्ण-सुदामा के बीच के संवाद और कृष्ण-रुक्मिणी तथा सुदामा और उनकी पत्नी के बीच के संवाद। नरोत्तमदास पुरुष और नारी मनोविज्ञान में अच्छी पैठ का साक्ष्य भी देते हैं। इन संवादो की सहजता और स्वाभाविकता हमारा विशेष रूप से ध्यान खींचती है। उनके जरिए हम यह जान पाते हैं कि विविध प्रकार की स्थितियों में मनुष्य की भिन्न-भिन्न प्रति क्रियाओं को भी नरोत्तमदास कितने नजदीक से जानते समझते थे। पति-पत्नी के बीच के मधुर सम्बन्ध को भी उजागर करते हैं। नरोत्तमदास की इस रचना में संवादों का गठन नाटकीय ढंग से हुआ है। उनके संवाद चरित्र की विशेषताओं और तत्कालीन परिवेश को समझने में सहायक हुए हैं । कुल मिलाकर नरोत्तमदास ने संवादो का सफलता पूर्वक संयोजन किया है।

नरोत्तमदास की 'सुदामा चरित' कृति का केन्द्रीय रस सख्य रस माना जा सकता है। पूरे काव्य का मूल भाव मैत्री है, इसीलिए रस के रूप में 'सख्य' रस को मानना उचित होगा। सुदामा और सुदामा की पत्नी के प्रारंभिक दरिद्र जीवन में करुण रस का अनुभव किया जा सकता है। उस प्रसंग से पाठक या श्रोता के मन में करुण भाव जरुर पैदा होता है, किन्तु उसे शास्त्रीय दृष्टि से करुण रस नही माना जा सकता। यदि सुदामा श्रीकृष्ण के मित्र न होकर कोई और होते तो करुण रस के लिए पूरा अवकाश होता, फिर भी भावात्मक दृष्टि से नरोत्तमदास ने सुदामा के दुःख पर दुःख प्रकट करके करुण भाव को उत्तेजित करने का प्रयास जरुर किया है। इस के साथ द्वारका के महलों को देखकर आश्चर्यचकित होने में अदभूत रस है श्रीकृष्ण पर सुदामा के क्रोध करने में रौद्र रस नहीं है, क्योंकि उन्होंने शाप देते-देते अपने को रोक लिया 'आगे चना गुरु मातु दुए' वाल छंद में भी हास्य रस न होकर हास्य भाव मात्र है। 'सुदामा चरित'के अंत में सुदामा और उनकी पत्नी के प्रेमपूर्ण वार्तालाप में श्रृंगार रस मानने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती। कुल मिलाकर नरोत्तमदास का 'सुदामा चरित' मैत्रीभाव के लक्ष्य को चलानेवाला आख्यान काव्य होने के कारण उसका मुख्य रस सख्य हैं और अंग रुप में करूण, हास्य, श्रृंगार, वीर, रोद्र आदि रस आये हैं। अतः नरोत्तमदास अन्य रसों के भी कुशल कवि थे, ऐसा प्रतीत होता है।

नरोत्तमदास के इस 'सुदामाचरित' में सख्य भावना का उदात्त रुप प्रकट हुआ है। यद्यपि कृष्ण भगवान की कृपा का अलौकिक रुप सबमें पाया जाता ह, और इसी से भक्तिभाव या भक्तिरस भी इस रचना में चित्रित हुआ है, तथापि सर्वाधिक मार्मिक प्रसंग कृष्ण-सुदामा मिलन है।

द्वारकाधीश महाराज कृष्ण जिस उत्कट प्रेमभाव से अपने बचपन के सखा सुदामा से मिलते हैं, वह मैत्री भाव की पराकाष्ठा का द्योतक है। सुदामा की दरिद्रता दूर करके कृष्ण ने अपनी 'दीनबन्धु' की अलौकिक विरद ही नहीं निभाई किन्तु मित्रभाव का औदात्य भी प्रकट किया है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि नरोत्तमदास भक्तिकाल के भक्त कवियों में तथा अपनी एक मात्र कृति 'सुदामा चरित' के बल पर सुकवियो में स्थान पाते हैं। सर्जन की दृष्टि से भले ही कवि ने एक ही कृति की रचना की है, किन्तु उनका नाम भारतीय साहित्य के इतिहास के पन्नों पर सदा के लिए अमर रहेगा, चाहे उसे स्थान कहीं भी मिले।

संदर्भ-सूची

1. कविवर नरोत्तमदास रचित 'सुदामा चरित', भूमिका एंव संपादन शिवकुमार मिश्र, पार्श्व पब्लिकेशन अहमदाबादं प्र,सं-२००१,पृ-५
2. वहो पृ. २१
3. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', आचार्य रामचन्द्र शुक्लम, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर प्र, सं-२००२